RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-03
March-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय दर्शन में ऋत की अवधारणा और कर्म सिद्धान्त

इरफान अहमद

सह आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

पृष्ठभूमि- भारत की भूमि ज्ञान और कर्म की भूमि रही है और भारत-वर्ष के इसी उज्ज्वल पक्ष ने भारत को विश्व गुरु की उपाधि से विभूषित किया। अगर भारत देश के गौरवशाली इतिहास, ज्ञान विज्ञान भारतीय संस्कृति को अध्ययन और उसके वैश्विक प्रभावों पर विचार विश्लेषण किया जाये तो निष्कर्ष यही होगा कि भारत ने विश्व से जितना लिया, उससे कहीं अधिक विश्व को दिया। भारत से निकली ज्ञान रूपी प्रकाश धाराओं ने न केवल विश्व स्तर पर भारत की महानता को प्रतिष्ठापित किया बल्कि सारे विश्व - समुदाय को सच्चाई, अच्छाई और सदमार्ग रूपी मार्ग दिखाकर जीवन के आध्यात्मिक पक्ष से भी परिचित कराया। दर्शन, आध्यात्मिकता और धर्म ही ये प्रकाश धाराएँ थीं। भारत ही इन प्रकाश की धाराओ का मौलिक जन्मदाता है और यहाँ से ये प्रकाश धाराएँ विभिन्न दार्शनिक, धार्मिक, आध्यात्मिक भाषाओं के रूप में सम्पूर्ण विश्व में प प्रसारित हुईं। इन सबके मूल में निहित है भारतीय दार्शनिक व आध्यात्मिक विचारधारा।

वस्तुतः मनुष्य सामाजिक, बौद्धिक और चिंतनशील प्राणी है और अपनी इसी विशेषता के कारण मानव ने अपने चिंतन -शक्ति रूपी बाण क्षेत्रों की और छोडे और यही प्रक्रिया आगे चलकर व्यापक विशेष विषय बनकर दर्शन के रूप में उभरकर सामने आई। मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति ने उसे स्वयं के बारे साथ ही जीवन, सृष्टि , ज्ञान, ज्ञान की प्रक्रिया, परम तत्व, ब्रह्माण्ड (अनंता प्रकृति, सृष्टि-व्यवस्था, सत्य , संसार के संबंध युक्ति पूर्वक वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्ति की दिशा में प्रयासरत
किया |

वास्तव में दर्शन मानव प्रकृति तथा इनकी व्यवस्था से संबंधित रहस्यों को जानने की विशिष्ट और विशेष दिशा में केन्द्रित एक प्रक्रिया है जो उस ओर अग्रसर है जिसको पाना, खोजना दर्शन का उदेश्य है। सत्य ज्ञान को प्रस्त करने की विचारों की उहापोह रूपी श्रृंखला का नाम ही दर्शन है। दर्शन ही धर्म, संस्कृति का आधार स्तम्भ 'होता है हमारी दार्शनिक विचारधारा ही ज्ञान विज्ञान, अध्यात्म जैसे स्वरूपों के माध्यम से धर्म, संस्कृति, परंपराओं, विचारों, व्यवहारों के माध्यम में व्यवहार रूप में अभिव्यक्त होती है। यही कारण रहा है कि भारतीय संस्कृति-सभ्यता भारतीय दर्शन से अनुप्राणित ही नहीं हुई है, बल्कि एक विशेष आकर्षण शक्ति, प्रकाशीय ऊर्जा और उत्तम विशेषताओं से युक्त भी हुई है l भारतीय दर्शन की इन्हीं विशेषताओं और विशेष दृष्टिकोण क्षेत्र ने इसे विशिष्टता प्रदान करते हुए पाश्चात्य दर्शन से प्रथक करते हुए विशेष दर्जा दिलाया है। भारतीय दर्शन की उत्कार्ष्ट अन्तर्वस्तु ही इसकी मौलिक शक्ति है l

भारतीय दर्शन इसकी उत्कृष्ट अन्तर्वस्तु भारतीय दार्शनिक विचार विश्व की प्राचीनतम, मौलिक और अन्य दार्शनिक शाखाओं की पथ -प्रदर्शक प्रेरक विचारधारा रही है। भारतीय दर्शन का क्षेत्र तथा दृष्टिकोण और उद्देश्य भी बहुत व्यापक है। वेदानुकूलन वेदविरोधी, प्राचीन तथा नवीन हिंदू तथा अहिंदू आस्तिक, व नास्तिक सब के दार्शनिक विचार भारतीय दर्शन' में है ।

भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन इस की व्यापक दृष्टि, समदि वत विचारधारों से मुक्त विभिन्न दार्शनिक व्यायाओं और विचार विमर्श की विशेष प्रणाली [पूर्व-११५-उत्तर-पत्र) को उभरकर सामने लाता है। भमानीय दर्शनों में प्रगाता (ममृडता, धापकता) विद्यमान है। कुछ दार्शनिक विचा ने तो यहाँ तक कह दिया है कि जिन विद्वानों को केवल भारतीय दर्शन का ज्ञान भली-भाँति प्राप्त है, वे बड़ी सुगमता से पाश्चात्य दर्शन की जटिल समस्याओं का भी समाधान प्राप्त कर लेते हैं।

भारतीय दर्शन में मुक्ति पूर्वक तत्वमीमांसीय ज्ञानमीमं ासीय और नीतिमीमांसीय विवेचन पिश्लेषण किया गया है और जो विशेष-प्रणाली के अनुसार भी हुआ है। भारतीय दार्शनिकों द्वारा तारिक, नीतिशास्त्रीय, तर्कशास्त्रीय. मन्ये वैज्ञानिक और ज्ञानशास्त्रीय स्टली दृष्टिकोणों से प्रत्येक विषय पर सामाजिक रूप में विचार किया गया है। इस प्रवृत्ति को बी० एO मोल जैसे विचारकों ने भारतीय दर्शन का सरले बचतक दृष्टिकोण कहा है।

संतः भारतीय दर्शन सेज, दृष्टिकोण तथा अन्तर्वस्तु तीनों आयामों से समृद्ध है। भारतीय दर्शन की विशेषताएँ और ऋतु की अवधारणा भारतीय दर्शन भारतीय संस्कृति सभ्यता की भात्मा के समान है। भारतीय दर्शनों में मतभेद के बावजूद, भतिम लक्ष्य की दृष्टि से नैतिक और आध्यामिक एकरूपता पाई जाती है। दर्शन धर्म का भाधार होता है और इसी आधार पर धर्म अपने वास्तविक और सत्य स्वरूप में स्थापित हो पाता है।

भारतीय दर्शन की उत्कृष्ट अन्तर्वस्तु हामी इसकी विशेषताओं में संक्षिप्त और सार-रूप में परिलक्षित होती है। भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ साधन के लिए है। साथ ही, दर्शन के अध्ययन का उद्देश्य मानसिक बन्छ (कौतूहल) अममेपन से मुक्ति नहीं है, बक्ति मनुष्य को दूर हीरे, भविष्य दृष्टि, अन्तर्दृष्टि के साथ जीवन-यापन की शिक्षा देना है। भारतीय दर्शन तत्व-विज्ञान, प्रमाण-विज्ञान, तर्क-विज्ञान के विचारों की दृष्टि से किसी भी पाश्चात्य दर्शन से कम नहीं है। आध्यात्मिक संद जगर में शाखत् नैतिक व्वस्था, अस्पर को रंगमंच

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारतीय दर्शन की महत्वपूर्ण विशेषणाएँ कही जा सकती है। इससे अज्ञान को बंधन का कारण मानना तथा पान से मुक्ति प्राप्ति भरान को दूर करने हेतु निदिध्यासन की आवश्यकता आत्मसंयम द्वारा कुट का निवारण तथा मुक्ति ही जीवन का चरम लक्ष्य भारतीय दर्शन के महत्वपूर्ण लक्षण है, जो इसकी उत्कृष्ट को उद्घाटित करते हैं।

'भारतीय दर्शन में ऋत' की अवधारणा का मौलिक खोत की प्राचीनतम और उत्कृष्टतम धार्मिक दार्शनिक कृति बड़े में है। वेदों के संबंध में डा0 राधाकृष्णन लिखते हैं- 'वेद मनुष्य के धार्मिक और दार्शनिक विचारों का मानव भाषा में प्रथम परिचय प्रस्तुत करता है। प्राचीनतम इतिहास, सामाजिक नियम, सदाचार, दर्शन, कला, धर्म आदि ज्ञान का आधार वेद हैं।

पिय की उत्पत्ति, जगर की नियमबद्ध व्यवस्था के संबंध में वों में विस्तृत विवरण है। ऋत की अवधारणा प्रत्यक्ष रूप से इसी शाखत, लेकि व्यवस्था से जुड़ी हुई है जो समस्त ब्रह्माण्ड प्रकृति, जीवन को मार भूत व्यवस्था का आधार है। वेदों में महल' शब्द का महत्व व्यापक है। ऋत' का अर्थ होता है जगत् की व्यवस्था। हमें चारों खेर इस अनंत ब्रह्माण्ड में जो व्यवस्था कुम्बकता, नियमबद्धता दिखाई देती है और जो है भी, उसका मूल आधार जहत ही है। ऋस्त को बेल्कि - नियम भी कहा गया है। इसे प्राकृतिक नियम (Natura) Law) श्री कहा जाता है। 'अमृत' समस्त जगत् का आधार है। रुसी नियम में सूर्य तारे, चंद्रमा दिन-रात आदि संचालित होते हैं। यह सिंत्य और सर्व- व्यापी नियम है। ऋत' के अनुसार ही जड़ जगत में, "वृक्ष ल जगत् में तथा प्राणी जगत् में व्यवस्था नियमबद्धता पाई जाती है। कहत- नियम ही आगे चल जाकर कर्मवाद को जन्म होता है।

भारतीय दर्शन में आध्यात्मिकता की ऊर्जा शहके है जो भारतीयों में भाषा, ऊर्जा का संचार करती है। हम माध्यामिकता के पीछे जगर की सैनिक भौतिक व्यवस्था का आधार विद्यमान है। विलियम जेम्स के "आध्यात्मवाद (Spitstralism) उसे कहते हैं जो यह विश्वास दिलाता हैलि जगत में एक शाखत नैतिक व्यवस्था है और जिससे अतुर आशा मिलती है। "

वस्तुतः भारतीय दर्शन में जगत की शाखत नैतिक व्यवस्था की अवधारणा काफी प्रबल, कशक्त तथा विश्वास एवं गदा की भावना से यह नैतिक व्यवस्था सार्वभौग है। यही सम्पूर्ण का मूल है। सभी में या सह में मातु वर्तमान है। वैदिक काल में लोगों की शांति का भी । ऋघवेद की प्रभातीत करती हैं। इस असंध व्यवस्था को ही जावेद में 'घात' कहा गया है। वैदिक काल के बाद मीमांगा में रहे अपर्व कहते है। वर्तमान काल के कर्मों का उपयोग परवती जीवन में अपूर्व के द्वारा ही किया जा सकता है।

न्याय-वैशेषिक में इसे 'महाष्ट' कहते हैं क्योंकि यह हीटर नही होता है उसका प्रभाव परमाणु पर भी पड़ता है। वस्तुओं का उत्पा दन तथा घटनाओं का उपक्रम इसी के अनुसार होता है। यही खसम नैतिक पावत्या आगे चलकर कर्मवाद में बदल जाती है। यही भारतीय दर्शन में 'मत' की अवधारणा तथा महत्व का संक्षिप्त विवेचन है।

भारतीय दर्शन और कर्म सिद्धांत (कर्मवार) - भारतीय दर्शन के साथ भारतीय संस्कृति में भी कर्म का सिद्धांत अत्यधि महत्वपूर्ण, उत्हार, दिशा निर्धारक और वैज्ञानिक नियम (विद्धांत) है। इस चिकांत के परिणामस्वरूप न केवल भारतीयों को, बल्कि सम्पूर्ण विश जन मानस को सह कर्म करने और बुरे कर्मों से दूर रहने की भन्तप्रेना मिली। पुनर्जन्म का सिद्धांत भी प्रत्यक्ष रूप से कर्म-सिद्धांत मे जुदा हुआ है।

कर्मवाद को लगभग भारत के सभी दर्शन मानते हैं। कर्मवाद के अनुसार उत्कर्ष, अर्थात कर्मों के धर्म तण अपर्य सर्पचा सुरक्षित रहते है । इमके अनुसार कृत-प्रणाश तथा अक्रताभ्युपगम नहीं होता है। भर्पत किए हुए कर्म का फल नहर नहीं होता है और बिना किम हुए कर्म का फल नहीं मिलता। हमारे कर्मों के फल का कभी मुख "नहीं होता और हमारे जीवन को वटनचाएँ हमारे अतीत तथा वर्तमान के कर्मों के अनुसार ही होती है। अपवाद स्वरूप चार्वाक को बेड़कर जैन, बौद्ध सहित सभी पट दर्शन कर्मवाद को स्वीकार करते हैं।

कर्मवाद का सिद्धांत एक वैज्ञानिक सिद्धांत कहा जा सकता है। कालान्तर जो वैज्ञानिक नियम न्यूटन ने बनाये, वो सभा नियम हमने भारतीय दार्शनिकों ने खोज लिये थे तथा उन्हें अर्जुन के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति को निष्काम भाव में कर्म करन की प्रेरणा देते हुए श्री कृष्ण कहते हैं कि हे मनुष्य! तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है, आके फलों में कभी नहीं। इसलिए तुम कर्मों के फल का हेतु न होयो तथा उसमें तुम्हारी आयक्ति भी नहीं।

निष्काम कर्म संभव है तथा कर्म करने की यही उत्कृष्टतम रीति है। निष्काम भाव में कर्म करने का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति को कर्म करने दोड़ होने चाहिए या कोई लक्ष्य नहीं रखना चाहिये या कर्म करने पर आपको फल नहीं मिलेगा बल्कि इसका अर्म यह है कि हम कर्म करेंगे तो फल मिलेगा ही, किंतु फल के अमवा फल को पहले में निर्धारण करने का अधिकार हमारा नहीं है। यही भाव निष्कामता का भाव है। उदाहरणार्थ खिलाड़ी खेल के सुख को ध्यान में रखकर खेलेगा तो उसे उतना आनंद नहीं मिलेगा। इसी तरह चिकित्तक, वकील अपने कार्य में असफल हो जाने पर भी हाथ-हाथ नहीं करते, क्योंकि वहाँ निष्कामता (कर्त्तव्य) की भावना होती है।

निष्काम-कर्म के द्वारा ही मनुष्य जन्म-मरण के बंधन से छूटकर परम- तत्व का आक्षात्कार (भात्म साक्षात्कार) कर सकता है। गीता कर्तय कर्तव्य के लिए " की शिक्षा देती है। स्वकर्म ही स्वधर्म हैं। गील निष्काम कर्म की शिक्षा देती है। मनुष्य को सदैव कर्तव्य, कर्तव्य के 'लिए' ही कर्म करना चाहिए। गीता को उपनिषदों, वेदों का भार कहा गया है। इसी विशेषता के कारण गीता को विश्व-स्तर प्रतिद्धि मिली।

नोबल पुरस्कार विजेता " (W.B. पट्स तथा 7.5. इलियर ने भारतीय संस्कृति और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ रची हैं और नोबल पुरस्कार जीता है। ऐलियर की रचना 'वेस्टलैंड' में लेखक ने यह बताया है कि पश्चिमी सभ्यता पूर्ण विकसित होकर, पूर्ण ऊँचाइयों को छूकर अब टूटने एवं पतन के कगार पर खड़ी है। पश्चिमी सभ्यता का नैतिक पतन हो रहा है और उसकेवल महज भारतीय ग्रंथ गीता के उपदेशों से ही उकारा जा सकता है। संक्षेप में, यही भारतीय दर्शन में कर्म संबंधी विवेचन और मानव समुदाय को महत्वपूर्ण देन है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

लिप कापी के रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय दर्शन में ऋत तथा कर्म संबंधी अवधारणा इसके महत्वपूर्ण मंग फिशेषताएँ ही नहीं हैं, बल्कि ऐमी उत्तम वैज्ञानिक बखाया और नियमों का सार हैं, जो हर मानव को उस परम अध्यात्म सत्ता का अहसास कराता है और सद्मार्ग पर चलते हुए अड कमे हुए ईश्वर साकार (मात्म-साक्षात्कार) का मार्ग मानव कसे उमला तत्व एवं परमात्म-तत्व की सर को जानने का उन्मुख करना भारतीय दर्शन की भरंत प्रेरणा है। जगर में शाश्वत नैतिक राम्ला मानव में माशावाद का मंचार करते हुए उसे मानवीयता सत्यता अच्चाई आध्यात्मिकता, सद्कर्म जैसी उत्कृष्ट मानवीय, धार्मिक दार्शनिक भावनाओं से अनुप्राणित करती हैं।

भारतीय दर्शन में निहित कर्मवाद एवं निष्कामता का भाव मनुष्य को कर्म और फल संबंधी अनिश्चितता, असमंजस से मुक्ति ही नहीं, दिलाता, बल्कि उसमे इतनी उर्जा का संचार करता है कि वो अपने अंदर निहित ऊर्जा का अधिकतम उपयोग करते हुए निरंतर अपनी राह (सद्मार्ग + सद्कर्म) पर आगे बढ़ता जाता है। यहाँ पर हम कह सकते हैं कि दर्शन के अध्ययन के उद्देश्यों की कसौटी पर भारतीय दर्शन खरा ही नहीं उतरता बल्कि उससे भी अधिक ज्ञान मानव जाति को प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति की उत्कृष्टता और विशिष्टता का मूल भारतीय दार्शनिक विचारधारा ही है।

भारतीय धर्म दर्शन की अध्यात्म उन्मुखता ही सृष्टि, मानव जीवन, सम्पूर्ण प्राणी वनस्पति जगत् को उत्कृष्ट बना सकती है । यही कारण है कि प्रभारतीय दर्शन पाश्चात्य दर्शन से किसी भी दुष्टि मे कम नहीं है बल्कि उद्देश्यों , संस्कृति और व्यावहारिक जीवन की दृष्टि से पाश्चात्य दर्शन से कई गुना श्रेष्ठ हैं। भारत के गौरवशाली अतीत, भारतीय धर्म-दर्शन और संस्कृति के प्रति जागरुक जिम्मेदार प्रत्येक भारतीय के लिए, भारतीय-दर्शन का पठन - पाठन परम आवश्यक है। यही भारतीय दार्शनिक-धार्मिक, सांस्कृतिक विरासत की रक्षा का उत्तम मार्ग है । वस्तुत: ऐसा करके ही हम प्राचीन दार्शनिक धार्मिक विद्वानों के प्रति न्याय कर सकेंगे, जिनके नाम पर हम गर्व से सिर उठाकर इस विश्व में जी रहे हैं।

वर्तमान दशा से ऊपर उठकर इस दिशा में चलकर ही भारतीय-दर्शन अपने प्राचीन गौरव,समृध्धता रूपी भावी आदर्श को पुनः हासिल कर सकेगा । भारतीय सैन की वर्तमान दशा और दिशा आज दर्शन के विद्यार्थियों शिक्षकों, विद्वानों, विचालों के समय एक चुनौति है। इस चुनौति की स्वीकृति ही उन्हें दर्शन विषय को चुनने और पढ़ने की सार्थकता तथा इस विषयसे जुड़े रहने का नैतिक अधिकार प्रदान करती है। भारतीय दर्शन हमसे अपने संरक्षण प्रसार तथा जीवन में अपनी व्यवहारिक अभिव्यक्ति की अपेक्षा रखता है। सत्योन्मुख युक्तियुक्त विचारों की विशिष्ट व्यवस्था और श्रृंखला को बनाये रखना तथा उत्कृष्ट विचारों की जीवन में व्यावहारिक परिणति हमारा कर्तव्य है।

संदर्भ :

1. भारतीय दर्शन: एन के देवराज
2. भारतीय दर्शन की आलोचनात्मक व्याख्या :चन्द्र धर शर्मा
3. सर्व दर्शन संग्रह : माध्वाचार्य भवन
4. Outlines of Indian Philosophy: M. Hiriyanna
5. भारतीय दर्शन: सतीश चन्द्र चटोओपाध्याय
6. Hutton, J. J., Caste in India, Oxford University Press, Oxford, 1961.
7. Iyer, Raghavan N., The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi, Oxford University Press, Delhi, 1973.
8. Kautilya, The Arthasastra, I. N. Rangarajan (ed.) Penguin Books Pvt. Ltd., New Delhi, 1976.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved